UP Board 10 Hindi 2024 Code : 801 (HD) Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours 15 Minutes	Maximum Marks :70	Total Questions :30

परीक्षार्थियों के लिये निर्देश :

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. इस प्रश्न-पत्र के दो खण्ड - खण्ड अ तथा खण्ड ब हैं ।
4. खण्ड अ में 1 अङ्क के 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिनके उत्तर ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक पर देने हैं ।
5. खण्ड अ के प्रत्येक प्रश्न का निर्देश पढ़कर केवल प्रदत्त ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक पर ही उत्तर दीजिए ।
6. ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक पर उत्तर देने के पश्चात् उसे काटें नहीं तथा इरेजर एवं ह्वाइटनर का प्रयोग न करें ।प्रश्न के अङ्क उसके सम्मुख अंकित हैं ।
7. खण्ड ब में 50 अङ्क के वर्णनात्मक प्रश्न हैं ।
8. खण्ड ब के सभी प्रश्नों के उत्तर एक साथ ही कीजिए ।

खण्ड - अ
(बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ निबन्धकार, आलोचक एवं इतिहासकार के रूप में जाने जाते हैं :

(A) बालकृष्ण भट्ट
(B) पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी'
(C) रामचन्द्र शुक्ल
(D) इनमें से कोई नहीं

सही उत्तर : (C) रामचन्द्र शुक्ल

उत्तर : रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक, इतिहासकार और निबंधकार थे । उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया और हिंदी साहित्य में आलोचना की नींव रखी । उनकी काव्यशास्त्र, आलोचना और हिंदी साहित्य के इतिहास पर रचनाएँ आज भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं ।

Quick Tip

रामचन्द्र शुक्ल का योगदान हिंदी आलोचना और साहित्य के इतिहास में अमूल्य है । उनकी रचनाएँ साहित्य के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं ।

2. 'महादेवी वर्मा' द्वारा रचित रेखाचित्र है :

(A) जिन्दगी मुस्कुराई
(B) अतीत के चलचित्र
(C) गाँव की साँझ
(D) बाजे पायलिया के घुँघरू

सही उत्तर : (B) अतीत के चलचित्र

उत्तर : महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र अतीत के चलचित्र है । यह रेखाचित्र उनकी काव्यात्मक और वर्णनात्मक शैली का बेहतरीन उदाहरण है, जिसमें उन्होंने ग्रामीण जीवन की सादगी और उसकी सुंदरता को चित्रित किया है । महादेवी वर्मा की रचनाओं में नारी के दर्द, प्रेम और समाज की स्थिति पर गहरी दृष्टि मिलती है ।

Quick Tip
महादेवी वर्मा की रचनाओं में भावनाओं का गहरा अनुभव और सामाजिक स्थिति की गहरी समझ मिलती है । उनकी काव्यात्मक शैली और रेखाचित्रों में गहरी संवेदनशीलता है ।

---

3. 'कोणार्क' के रचनाकार है :

(A) जगदीश माथुर
(B) रामकुमार वर्मा
(C) जयशंकर प्रसाद
(D) विष्णु प्रभाकर

सही उत्तर : (A) जगदीश माथुर

उत्तर : 'कोणार्क' के रचनाकार जगदीश माथुर हैं । यह नाटक प्रसाद जी की महान काव्यात्मकता और शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर को अत्यधिक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है । जगदीश माथुर का योगदान हिंदी साहित्य में विशेष रूप से नाट्य लेखन और काव्य रचनाओं में अमूल्य है ।

Quick Tip
जयशंकर प्रसाद के नाटक समाज और संस्कृति के गहरे पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं और उनका लेखन हमेशा प्रेरणादायक और विचारशील होता है ।

---

4. 'चलो चाँद पर चलें' के रचनाकार हैं :

(A) धर्मवीर भारती
(B) जयप्रकाश 'भारती'
(C) 'अज्ञेय'
(D) मोहन राकेश

सही उत्तर : (B) जयप्रकाश 'भारती'

उत्तर : 'चलो चाँद पर चलें' के रचनाकार जयप्रकाश 'भारती' हैं । यह एक प्रसिद्ध नाटक है, जिसमें मानवता, प्रेम और समाज के बुनियादी सवालों पर गहरा प्रकाश डाला गया है । जयप्रकाश 'भारती' का लेखन सशक्त सामाजिक संदेशों से भरपूर होता था और उनके नाटकों और कहानियों में सामाजिक सुधार की आवश्यकता को महसूस किया जाता था ।

Quick Tip
धर्मवीर भारती के नाटक और काव्य रचनाएँ समाज के गहरे मुद्दों को उजागर करती हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं ।

---

5. 'तूफानों के बीच' रचना की विधा है :

(A) कहानी
(B) उपन्यास
(C) एकांकी
(D) रिपोर्ताज

सही उत्तर : (D) रिपोर्ताज

उत्तर : 'तूफानों के बीच' की रचना विधा 'रिपोर्ताज' है । यह रचना समाज में होने वाली घटनाओं को पत्रकारिता के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है । इसमें लेखक ने समाज और विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला है, जो समाज को जागरूक करता है ।

Quick Tip
रिपोर्ताज समाजिक मुद्दों और घटनाओं की सूचनाओं को प्रस्तुत करने का एक प्रभावी माध्यम है, जो पाठकों को विश्लेषण और विचार करने के लिए प्रेरित करता है ।

---

6. 'केशवदास' किस काल के कवि हैं ?

(A) आदिकाल
(B) रीतिकाल
(C) भक्तिकाल
(D) आधुनिक काल

सही उत्तर : (B) रीतिकाल

उत्तर : केशवदास रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं । रीतिकाल में कविता का स्वरूप प्रेम, शृंगार और उपदेशात्मक विषयों के इर्द-गिर्द घूमता था । केशवदास की रचनाओं में शृंगारी भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है ।

Quick Tip
रीतिकाव्य में शृंगार रस का प्रमुख स्थान है, और केशवदास की काव्य रचनाएँ इस शैली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं ।

---

7. 'भारत-भारती' के रचनाकार हैं :

(A) मैथिलीशरण गुप्त
(B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(C) माखनलाल चतुर्वेदी
(D) सूरदास

सही उत्तर : (A) मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर : 'भारत-भारती' के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं । यह कविता भारतीय राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उनके प्रेम और निष्ठा को दर्शाती है । चतुर्वेदी जी ने अपने काव्य में देशभक्ति के गीतों के माध्यम से भारतीय समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया ।

Quick Tip
'भारत-भारती' भारतीय राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम की भावना से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायक काव्य रचना है ।

---

8. 'भारतेन्दु युग' की समयावधि है :

(A) सन् 1900 से 1928 ई० तक
(B) सन् 1868 से 1900 ई० तक
(C) सन् 1919 से 1936 ई० तक
(D) सन् 1800 से 1826 ई० तक

सही उत्तर : (B) सन् 1868 से 1900 ई० तक

उत्तर : 'भारतेन्दु युग' का समय 1868 से 1900 ई. तक था । इस समय के दौरान भारतीय साहित्य में नवजागरण की शुरुआत हुई और भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव रखी । उनका योगदान भारतीय साहित्य और समाज में बहुत महत्वपूर्ण था ।

Quick Tip

भारतेन्दु युग को हिंदी साहित्य के आधुनिक युग की शुरुआत माना जाता है, जो सामाजिक और साहित्यिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण था ।

---

9. 'सुमित्रानन्दन पन्त' की रचना नहीं है :

(A) ग्राम्या
(B) स्वर्णधूलि
(C) कामायनी
(D) युगान्त

सही उत्तर : (C) कामायनी

उत्तर : कामायनी सुमित्रानन्दन पन्त की रचना नहीं है । 'कामायनी' उनकी प्रमुख रचनाओं में से एक है, जो भारतीय संस्कृति और जीवन के आदर्शों को बखूबी प्रस्तुत करती है ।

Quick Tip

सुमित्रानन्दन पन्त की रचनाएँ छायावादी काव्यधारा का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनमें प्राकृतिक सौंदर्य और भावनाओं का गहरा चित्रण किया गया है ।

---

10. 'रीतिमुक्त' काव्यधारा के कवि हैं :

(A) बिहारीलाल
(B) पद्माकर
(C) केशवदास
(D) घनानन्द

सही उत्तर : (C) केशवदास

उत्तर : केशवदास रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं । रीतिमुक्त काव्यधारा ने कविता के शास्त्रीय रूपों से बाहर निकलकर अधिक स्वच्छंद और भावुक काव्य शैली को अपनाया ।

Quick Tip

रीतिमुक्त काव्यधारा में कवि अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करते हैं, जिससे कविता में अधिक जीवन्तता और नवीनता आती है ।

---

11. 'हा ! रघुनन्दन प्रेम परीते ।

तुम बिन जियत बहुत दिन बीते ।।'
उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त रस है :

(A) वीर रस
(B) हास्य रस
(C) करुण रस
(D) रौद्र रस

सही उत्तर : (C) करुण रस

उत्तर : उपर्युक्त पंक्तियों में करुण रस प्रयुक्त है । इन पंक्तियों में रघुनन्दन (राम) के प्रेम में अलगाव और प्रेम की पीड़ा का चित्रण किया गया है, जो करुण रस की विशेषता है ।

Quick Tip
करुण रस का प्रभाव पाठक के दिल को छूने वाला होता है, क्योंकि यह गहरी भावनाओं और दु:ख को व्यक्त करता है ।

---

12. "ज्यौं आँखिनु सब देखियै, आँख न देखी जाँहि ।" उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(A) उपमा अलंकार
(B) रूपक अलंकार
(C) श्लेष अलंकार
(D) उत्प्रेक्षा अलंकार

सही उत्तर : (B) रूपक अलंकार

उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति में रूपक अलंकार प्रयुक्त है । 'ज्यौं आँखिनु सब देखियै' में 'ज्यौं' शब्द का प्रयोग उपमा की तरह किया गया है, क्योंकि यहाँ किसी वस्तु की तुलना आँख से की जा रही है । रूपक अलंकार में किसी वस्तु की तुलना किसी अन्य वस्तु से की जाती है ।

Quick Tip
उपमा अलंकार में किसी एक चीज की तुलना दूसरे से की जाती है, ताकि उसकी विशेषता या गुण स्पष्ट हो सकें ।

---

13. 'सोरठा' छन्द के पहले एवं तीसरे चरण में मात्राएँ होती हैं :

(A) 13-11 मात्राएँ
(B) 11-13 मात्राएँ
(C) 11-11 मात्राएँ
(D) इनमें से कोई नहीं

सही उत्तर : (A) 13-11 मात्राएँ

उत्तर : सोरठा छन्द के पहले और तीसरे चरण में 13-11 मात्राएँ होती हैं । यह एक विशेष प्रकार का छन्द है, जो हिंदी कविता में उपयोग किया जाता है और इसकी एक विशिष्ट लय और प्रवाह होता है ।

Quick Tip
सोरठा छन्द में 13-11 मात्राओं का विशिष्ट संतुलन होता है, जिससे इसकी लय और प्रवाह में सुंदरता आती है ।

---

14. 'सुगम' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है :

(A) सु
(B) स
(C) सुग
(D) गम

सही उत्तर : (A) सु

उत्तर : 'सुगम' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग 'सु' है । 'सु' उपसर्ग का अर्थ होता है 'अच्छा' या 'सुगम', जो किसी चीज को अच्छा या सरल बनाने के लिए जोड़ा जाता है ।

Quick Tip
उपसर्ग शब्द की विशेषता और अर्थ को बदलने के लिए प्रयोग होते हैं । 'सु' उपसर्ग किसी शब्द को सकारात्मक रूप में बदलने के लिए प्रयुक्त होता है ।

---

15. 'नवरत्न' में समास है :

(A) कर्मधारय समास
(B) द्विगु समास
(C) तत्पुरुष समास
(D) अव्ययीभाव समास

सही उत्तर : (B) द्विगु समास

उत्तर : 'नवरत्न' में समास द्विगु समास है । द्विगु समास में एक शब्द दूसरे शब्द के साथ जुड़कर एक नया अर्थ उत्पन्न करता है । 'नवरत्न' में 'नौ' (संख्या) और 'रत्न' (मूल्यवान वस्तु) के मिलकर 'नवरत्न' (नौ रत्नों का समूह) का अर्थ बनता है ।

Quick Tip

तत्पुरुष समास में एक शब्द दूसरे शब्द के साथ मिलकर विशेष रूप से कोई स्थिति, गुण या संख्या व्यक्त करता है, जैसे 'नवरत्न' (नौ रत्न) ।

---

16. 'पृथ्वी' का पर्यायवाची शब्द नहीं है :

(A) भू
(B) धरा
(C) वसुधा
(D) प्रसून

सही उत्तर : (D) प्रसून

उत्तर : 'पृथ्वी' का पर्यायवाची शब्द 'प्रसून' नहीं है । 'प्रसून' का अर्थ 'फूल' होता है, जबकि 'पृथ्वी' के पर्यायवाची शब्द 'भू', 'धरा' और 'वसुधा' हैं ।

Quick Tip

पर्यायवाची शब्द वे होते हैं जिनका अर्थ समान होता है, जैसे 'पृथ्वी' के पर्यायवाची शब्द 'धरा', 'वसुधा' और 'भू' हैं, लेकिन 'प्रसून' इसका पर्याय नहीं हो सकता ।

---

17. 'त्वाम्' शब्द में विभक्ति एवं वचन है :

(A) द्वितीया विभक्ति, एकवचन
(B) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(C) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
(D) तृतीया विभक्ति, एकवचन

सही उत्तर : (B) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

उत्तर : 'त्वाम्' शब्द में चतुर्थी विभक्ति, एकवचन और 'एकवचन' है । 'त्वाम्' शब्द का प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से उद्दिष्ट करने के लिए किया जाता है और यह द्वितीया विभक्ति में होता है । 'त्वाम्' का अर्थ होता है 'तुमको' ।

Quick Tip

'द्वितीया विभक्ति' का प्रयोग जब किसी व्यक्ति या वस्तु को प्रत्यक्ष रूप से उद्दिष्ट करना हो, तब किया जाता है ।

---

18. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद हैं :

(A) चार
(B) आठ
(C) दो
(D) पाँच

सही उत्तर : (B) आठ

उत्तर : अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं । ये हैं :
1. सकारात्मक वाक्य
2. नकारात्मक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. विस्मयादिबोधक वाक्य

Quick Tip
वाक्य के भेद वाक्य के अर्थ और उद्देश्य के आधार पर होते हैं, जैसे सकारात्मक, नकारात्मक, प्रश्नवाचक, और विस्मयादिबोधक ।

---

19. 'कर्तृवाच्य' में प्रधानता होती है :

(A) क्रिया की
(B) विशेषण की
(C) कर्ता की
(D) कर्म की

सही उत्तर : (C) कर्ता की

उत्तर : 'कर्तृवाच्य' में प्रधानता कर्ता की होती है । कर्तृवाच्य वह रूप है जिसमें किसी क्रिया का कर्ता प्रमुख होता है, अर्थात क्रिया करने वाला व्यक्ति या तत्व । जैसे 'राम ने पत्र लिखा' वाक्य में 'राम' कर्तृवाच्य है ।

Quick Tip
'कर्तृवाच्य' में मुख्य रूप से क्रिया करने वाले कर्ता का ही उल्लेख किया जाता है ।

---

20. जिनके अलग-अलग रूप वाक्यों में मिलते हैं, वे पद कहलाते हैं :

(A) विकारी पद
(B) अविकारी पद
(C) प्रत्यय पद

(D) अव्यय पद

सही उत्तर : (A) विकारी पद

उत्तर : जिनके अलग-अलग रूप वाक्यों में मिलते हैं, वे 'विकारी पद' कहलाते हैं । विकारी पद वे होते हैं, जो रूप बदलते हैं, जैसे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि, जो वाक्य में अपनी स्थिति और लिंग के अनुसार रूप बदलते हैं ।

Quick Tip
विकारी पद वे होते हैं जिनके रूप में बदलाव होता है और ये वाक्य में अपना कार्य करने के लिए रूप बदलते रहते हैं ।

खण्ड - 'ब'
वर्णनात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश : जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आये हैं, उन्हें अपने अ-तीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है । वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं । तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्जवल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत । वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है । तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं । तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक । इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है ।

(i) उपर्युक्त अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश का पाठ 'वर्तमान काल' है और लेखक का नाम 'विनोबा भावे' है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में लेखक ने वृद्धों और तरुणों के दृष्टिकोण में भिन्नता का चित्रण किया है । लेखक बताते हैं कि वृद्धों के लिए अतीत का समय बड़ा सुखद होता है, जबकि तरुण भविष्य को उज्जवल मानते हैं । दोनों का वर्तमान से असंतोष है, क्योंकि वृद्ध अतीत में खोये रहते हैं और तरुण भविष्य में । यही भिन्न दृष्टिकोण वर्तमान काल को सदैव सुधारों का काल बना देता है, क्योंकि दोनों वर्गों की आकांक्षाएँ और विचार वर्तमान को प्रभावित करते हैं ।

(iii) लेखक ने वर्तमान काल को सुधारों का काल क्यों कहा है ?

उत्तर : लेखक ने वर्तमान काल को सुधारों का काल इसलिए कहा है क्योंकि वर्तमान समय में वृद्ध अतीत की ओर देख रहे होते हैं और तरुण भविष्य की ओर । दोनों का असंतोष और अलग दृष्टिकोण वर्तमान में सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता को जन्म देते हैं । यही कारण है कि वर्तमान काल हमेशा सुधारों के काल के रूप में बदलता रहता है, क्योंकि दोनों वर्गों की आकांक्षाएँ उसे प्रभावित करती हैं और उसे बेहतर बनाने के प्रयास करते हैं ।

Quick Tip

वर्तमान काल में सुधारों की आवश्यकता और महत्व वृद्धों और तरुणों के दृष्टिकोणों के संघर्ष से उत्पन्न होता है, जो समय को बदलने और सुधारने की दिशा में योगदान करते हैं ।

अथवा

गद्यांश : ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वंद्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता । यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्विता से भी मनुष्य का विकास होता है । किन्तु, अगर आप संसार व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे । मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकूलस से, जिस हरकूलस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ ।

(i) उपर्युक्त अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश का पाठ 'प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या' है और लेखक का नाम 'बरनार्ड शॉ' है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में लेखक यह दर्शाते हैं कि ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता का गहरा संबंध है । वे यह कह रहे हैं कि जब कोई व्यक्ति किसी बड़े लक्षय को प्राप्त करने की इच्छा रखता है तो वह उन व्यक्तियों से प्रतिस्पर्धा करता है जो उससे उच्च स्थान पर होते हैं । यहां तक कि महान व्यक्तियों जैसे नेपोलियन, सीज़र और सिकंदर ने भी अपने समय के सबसे महान व्यक्तियों से प्रतिस्पर्धा की । लेखक यह संकेत देते हैं कि इस तरह की प्रतिद्वंद्विता से भी व्यक्ति का विकास होता है, क्योंकि यह उसे अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है ।

(iii) लेखक के अनुसार प्रतिद्वंद्विता का सकारात्मक पक्ष क्या है ?

उत्तर : लेखक के अनुसार, प्रतिद्वंद्विता का सकारात्मक पक्ष यह है कि इससे मनुष्य का विकास होता है । जब कोई व्यक्ति अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति से प्रतिस्पर्धा करता है, तो वह अपनी क्षमता को पहचानता है और अधिक प्रयास करता है । इससे उसकी कड़ी मेहनत और मानसिक मजबूती में सुधार होता है, जिससे उसे अपने लक्षय को प्राप्त करने में मदद मिलती है ।

Quick Tip

प्रतिद्वंद्विता न केवल प्रतिस्पर्धा को बढ़ाती है, बल्कि यह व्यक्ति को अपनी सीमाओं को पार करने के लिए प्रेरित भी करती है, जिससे विकास संभव होता है ।

---

2. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पद्यांश : मैया हौं न चरैहीं गाइ ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ ।
जौ न पत्याही पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर : यह पद्यांश सूरदास जी की रचना 'बालकृष्ण के बाल रूप' से लिया गया है, जिसमें भगवान श्री कृष्ण के बाल रूप का चित्रण किया गया है । यहाँ कृष्ण अपनी माँ यशोदा से गाय चराने की अनुमति नहीं चाहते और अपनी नटखटता से उन्हें परेशान करते हैं । यह पद्यांश कृष्ण के बालपन और उनकी शरारतों को दर्शाता है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में कृष्ण अपनी माँ यशोदा से कह रहे हैं कि वह गाय चराने नहीं जाना चाहते क्योंकि ग्वाले उन्हें परेशान करेंगे और उनके पैरों में बिवाइयाँ डाल देंगे । कृष्ण का यह संवाद उनके नटखट और शरारती स्वभाव को दर्शाता है, जो वह अपनी माँ को गुस्से में लाने के लिए करते हैं । यह उनके चंचल और प्यारे बाल रूप का एक सुंदर उदाहरण है ।

(iii) बालकृष्ण गाय चराने क्यों नहीं जाना चाहते हैं ?

उत्तर : बालकृष्ण गाय चराने नहीं जाना चाहते क्योंकि उन्हें डर है कि ग्वाले उन्हें परेशान करेंगे और उनके पैरों में बिवाइयाँ डाल देंगे । कृष्ण का यह संवाद उनके शरारती स्वभाव को उजागर करता है, जहाँ वह अपनी माँ से ध्यान आकर्षित करने के लिए ऐसी बातें करते हैं । यह उनके बाल रूप की मासूमियत और चंचलता को दिखाता है ।

Quick Tip
बालकृष्ण के व्यवहार में नटखटता और शरारतों का विशेष स्थान है, जो उनके अद्भुत प्रेम और बाल रूप की पहचान है ।

अथवा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त पद्यांश प्रसिद्ध हिंदी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य रचना "हिंदी शौर्य" या "सिंहासन हिल रहा है" से लिया गया है । इस कविता में कवि ने देशभक्ति और आत्मोत्सर्ग की भावना को व्यक्त किया है । कवि यह कहते हैं कि उन्हें किसी भी सांसारिक वस्तु की चाह नहीं है, केवल वह अपने प्राणों की आहुति मातृभूमि के लिए देना चाहते हैं । यह कविता देशप्रेम और बलिदान की भावना को जगाती है, जहाँ वीरों द्वारा मातृभूमि की रक्षा की जाती है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में कवि यह व्यक्त करते हैं कि उन्हें किसी सांसारिक इच्छाओं की कोई महत्वता नहीं है । वह ना तो गहनों में गूँथने की चाह रखते हैं, ना प्रेमी-माला में बिंधने की, ना सम्राटों के शव पर चढ़ने की । उनका एकमात्र उद्देश्य मातृभूमि के लिए बलिदान होना है । उनका यह विचार है कि यदि उनका जीवन और शरीर कोई उपयोगी कार्य कर सकता है, तो वह केवल मातृभूमि के लिए होना चाहिए । इस प्रकार, कवि देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं ।

(iii) उपर्युक्त अवतरण में पुष्प किसका प्रतीक है ? पुष्प को किन चीजों की चाह नहीं है, और क्यों ?

उत्तर : उपर्युक्त अवतरण में 'पुष्प' का प्रतीक 'जीवन' के रूप में लिया जा सकता है । पुष्प को किसी सांसारिक चीजों की चाह नहीं है, जैसे कि गहनों में गूँथना, प्रेमी-माला में बिंधना, सम्राटों के शव पर चढ़ना, या देवों के सिर पर चढ़ना । पुष्प का केवल एक उद्देश्य है, वह मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना है । इसका मतलब यह है कि जीवन को केवल उन कार्यों में ही समर्पित किया जाए जो राष्ट्र के लिए उपयोगी और पवित्र हों । कवि यह दिखाना चाहते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं, बल्कि मातृभूमि की सेवा और उसके लिए बलिदान करना होना चाहिए ।

Quick Tip
कवि का संदेश है कि जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य अपने देश की सेवा और उसे समर्पित करना है, न कि सांसारिक इच्छाओं को पूरा करना ।

---

3. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

गद्यांश :
'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव' इति भारतीयसंस्कृते : मूलम् । विभिन्नमतावलम्बिन : विविधः नामभिः एकम् एवं ईश्वरं भजन्ते । अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, राम :, रहीमः, जिनः, बुद्धः, ख्रिस्तः, अल्लाह : इत्यादीनि नामानि एकस्य एवं परमात्मनः सन्ति । तम् एव ईश्वरं जना : गुरुः इत्यपि मन्यते । अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः ।

हिन्दी अनुवाद : 'विश्व का स्रष्टा ईश्वर एक ही है' यह भारतीय संस्कृति का मूल विचार है । विभिन्न मतावलंबी विभिन्न नामों से उसी एक ईश्वर की पूजा करते हैं । अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्ध, ख्रिस्त, अल्लाह आदि नाम उस एक परमात्मा के हैं । वही ईश्वर सभी के लिए गुरु के रूप में

पूज्य है । इस प्रकार हमारे संस्कृत के संदेश में सभी मतों के प्रति समानता और सम्मान है ।

Quick Tip
भारतीय संस्कृति में धर्मों की विविधता को सम्मान देने का संदेश है, और यह हमें यह सिखाता है कि सभी धर्मों का अंतिम उद्देश्य एक ही ईश्वर की पूजा करना है ।

अथवा

गद्यांश :
ताडित : चन्द्रशेखर : पुनः पुनः 'भारतं जयतु' इति वदति । (एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडित :) यदा चन्द्रशेखर : कारागारात् मुक्त : बहिः आगच्छति, तदैव सर्वे जना : तं परितः वेष्टयन्ति, बहव : बालका : तस्य पादयो : पतन्ति, तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च ।

हिन्दी अनुवाद : चन्द्रशेखर जी को बार-बार 'भारत को जय हो' कहते हुए मारा जाता है । (इस प्रकार वे पंद्रह बार आघात सहने के बाद भी ताड़ित होते हैं) । जब चन्द्रशेखर कारागार से मुक्त होकर बाहर आते हैं, तो सभी लोग उन्हें घेर लेते हैं । कई बच्चे उनके चरणों में गिरकर उन्हें प्रणाम करते हैं और उन्हें हारों से सम्मानित करते हैं ।

Quick Tip
यह गद्यांश चन्द्रशेखर आज़ाद के साहस और उनकी निस्वार्थ देशभक्ति को दर्शाता है, जिनकी शक्ति और संघर्ष ने उन्हें जनता के दिलों में एक अडिग स्थान दिलवाया ।

---

4. दिए गए संस्कृत पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

पद्यांश :
नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप ! कदापि मा कृथाः ।
अत्यन्तसरस हृदयो यतः परेषां गुणग्रहीताऽसि ।।

हिन्दी अनुवाद : 'हे कूप ! तुम स्वयं को अत्यन्त नीच समझते हो, कृपया मुझे इससे खेदित मत करो । तुम अत्यन्त सुंदर हृदय वाले हो, इसलिए तुम दूसरों के गुणों को आसानी से ग्रहण कर लेते हो ।'

Quick Tip
यह पद्यांश इस विचार को व्यक्त करता है कि जो व्यक्ति अपनी कमजोरी को स्वीकार करता है, वह दूसरों के अच्छे गुणों को ग्रहण करने में सक्षम होता है, और इस प्रकार समाज में श्रेष्ठ बन सकता है ।

अथवा

सार्थ : प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः ।
आतुरस्य भिषक मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ।।

हिन्दी अनुवाद : जब कोई व्यक्ति यात्रा पर जाता है, तो उसका मित्र उसका साथ होता है । घर में रहते हुए पत्नी मित्र होती है । रोगी के लिए चिकित्सक मित्र होता है, और जब कोई व्यक्ति मरने वाला होता है, तब दान करने वाला व्यक्ति मित्र होता है ।

Quick Tip
यह संस्कृत श्लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं में मित्रता की महिमा को दर्शाता है, जिसमें मित्र का महत्व यात्रा, घर, बीमारी और मृत्यु के समय में होता है ।

---

5. अपने पठित खण्डकाव्य के आधार पर दिए गए प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(क) (i) 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के 'पंचम सर्ग' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग में महात्मा गांधी के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को चित्रित किया गया है । इस सर्ग में गांधीजी की भारत की स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उनके योगदान और अहिंसा के मार्ग पर चलने की दृढ़ता को प्रमुख रूप से दर्शाया गया है । सर्ग में गांधीजी की विचारधारा, उनके संघर्ष, और भारतीय जनता को एकजुट करने की उनकी क्षमता को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है । इसके अतिरिक्त, गांधीजी के व्यक्तित्व में त्याग, सेवा, और सच्चाई के प्रति अडिग विश्वास का भी उल्लेख किया गया है ।

(ii) 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर 'महात्मा गाँधी' के चरित्र की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक और उच्च नैतिक मानकों पर आधारित था । उनकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :
1. अहिंसा के प्रति अडिग विश्वास : गांधीजी ने हमेशा अहिंसा को अपने संघर्ष का मूलमंत्र माना । उनका विश्वास था कि बिना हिंसा के भी सामाजिक और राजनीतिक बदलाव लाया जा सकता है ।
2. सत्य के प्रति निष्ठा : गांधीजी ने सत्य को अपनी जीवनशैली और आचरण का आधार माना । उनका मानना था कि सत्य ही सबसे बड़ी शक्ति है ।
3. संघर्ष और त्याग : गांधीजी ने व्यक्तिगत सुख और भौतिकवादी जीवन के बजाय समाज की भलाई और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया । उनका जीवन संघर्ष और त्याग का प्रतीक था ।
4. समानता और धार्मिक सहिष्णुता : गांधीजी ने सभी धर्मों और जातियों के बीच समानता और भाईचारे का प्रचार किया । वे समाज में किसी भी प्रकार के भेदभाव के खिलाफ थे ।
5. स्वदेशी आंदोलन और स्वावलंबन : गांधीजी ने स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने का आह्वान किया, जिससे भारतीय जनता को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिली ।

Quick Tip

महात्मा गांधी का जीवन एक प्रेरणा है, जो सत्य, अहिंसा और सेवा के सिद्धांतों पर आधारित था । उनका संघर्ष और त्याग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मार्गदर्शन करता है ।

(ख) (i) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में जवाहरलाल नेहरू के चरित्र का चित्रण एक प्रेरणादायक और महान नेता के रूप में किया गया है । उनका जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पण, विचारशीलता और संघर्ष का प्रतीक था । कुछ मुख्य विशेषताएँ जो उनके चरित्र में प्रमुख हैं :

1. समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठा : नेहरू जी का जीवन हमेशा भारतीय समाज की भलाई और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति निष्ठावान था । उनका उद्देश्य केवल स्वतंत्रता प्राप्त करना ही नहीं था, बल्कि भारतीय समाज को एकजुट और सशक्त बनाना भी था ।
2. सपने और दृष्टिकोण : उनका दृष्टिकोण व्यापक था । उन्हें भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए न्याय और समानता का सपना था । उनका उद्देश्य सिर्फ राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता भी था ।
3. शिक्षा और ज्ञान के प्रति प्रेम : नेहरू जी ने हमेशा शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी । उन्हें विश्वास था कि समाज के विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है । उन्होंने भारत में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कई कदम उठाए ।
4. सहिष्णुता और मानवतावाद : नेहरू जी की राजनीति में सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता और मानवतावाद के सिद्धांतों का पालन किया गया । उनका मानना था कि एक मजबूत राष्ट्र तब तक नहीं बन सकता, जब तक उसमें धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं का सम्मान नहीं किया जाए ।

(ii) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के कथानक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक जवाहरलाल नेहरू के जीवन और उनके विचारों पर आधारित है । यह खण्डकाव्य नेहरू जी के संघर्ष, उनकी राजनीतिक यात्रा, और उनके नेतृत्व की विशेषताओं को दर्शाता है । काव्य में उनके द्वारा भारत को स्वतंत्रता दिलाने के संघर्ष के दौरान आने वाली चुनौतियों और उनके द्वारा उठाए गए कदमों का विवरण किया गया है ।

काव्य के आरंभ में नेहरू जी की प्रेरणादायक शिक्षा, उनके विचार और उनकी मान्यताएँ प्रस्तुत की जाती हैं । यह खण्डकाव्य उनके व्यक्तित्व के हर पहलू को उजागर करता है, जिसमें उनका परिवार, उनकी शिक्षा, उनका व्यक्तिगत जीवन और भारतीय राजनीति में उनका योगदान शामिल है । यह काव्य नेहरू जी के समर्पण और उनके द्वारा भारतीय समाज में किए गए योगदान को सम्मानित करता है ।

काव्य के अंत में, नेहरू जी के जीवन का दर्शन और उनके आदर्शों का महत्व पर जोर दिया गया है । उनका जीवन एक प्रेरणा है, जो आज भी भारतीयों को एकजुट रहने और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करता है ।

Quick Tip

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य नेहरू जी के जीवन को प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है, जो हर भारतीय नागरिक को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करता है ।

(ग) (i) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग 'भामाशाह' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग 'भामाशाह' में भामाशाह के महान त्याग और बलिदान का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति को राजा महाराणा प्रताप की सेना के लिए दान करने का निर्णय लिया । उनका यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था, क्योंकि उस समय महाराणा प्रताप के पास युद्ध के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं थे । भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति और संसाधनों से महाराणा प्रताप को पूरी मदद दी, जिससे उनकी सेना को संघर्ष करने के लिए आवश्यक सामग्री मिली । भामाशाह का यह महान कार्य उनके महान त्याग, राष्ट्र प्रेम और समर्पण को दर्शाता है ।

(ii) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के नायक महाराणा प्रताप के चरित्र का चित्रण अत्यन्त प्रेरणा-दायक और महान व्यक्तित्व के रूप में किया गया है । उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. साहस और वीरता : महाराणा प्रताप एक महान योद्धा थे जिन्होंने मुगलों से संघर्ष किया और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया । उनका साहस और वीरता उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी ।
2. निष्ठा और समर्पण : महाराणा प्रताप ने अपनी निष्ठा और समर्पण से राजधर्म और मातृभूमि की रक्षा की । उन्होंने अपने जीवन में कई कठिनाइयाँ झेली, लेकिन कभी भी अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटे ।
3. स्वतंत्रता प्रेम : महाराणा प्रताप ने मुगलों से अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की और हमेशा स्वतंत्रता की भावना को बनाए रखा । उनका यह प्रेम उनकी स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रति अडिग विश्वास को दर्शाता है ।
4. त्याग और बलिदान : उन्होंने अपने परिवार और राज्य के लिए व्यक्तिगत सुख और समृद्धि का त्याग किया । उनके त्याग और बलिदान ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक अमूल्य स्थान दिलाया ।
5. समानता और धर्मनिरपेक्षता : महाराणा प्रताप ने अपने शासन में सभी जातियों और धर्मों के लोगों को समान अधिकार दिया । वे हमेशा धर्मनिरपेक्ष विचारों को मानते थे और हर व्यक्ति का सम्मान करते थे ।

Quick Tip

महाराणा प्रताप का जीवन प्रेरणा का स्रोत है, जो हमें अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करता है और देशभक्ति और त्याग का सही मतलब सिखाता है ।

(घ) (i) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'प्रस्थान' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'प्रस्थान' सर्ग में श्रीकृष्ण के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में श्रीकृष्ण के जीवन का वह समय दर्शाया गया जब उन्होंने गोकुल और मथुरा की भूमि से अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए प्रस्थान किया । उनके प्रस्थान के साथ ही मथुरा में उनकी भूमिका का आरंभ हुआ और उन्होंने धर्म और न्याय की स्थापना के लिए युद्ध किया । इस सर्ग में कृष्ण के उत्साही और संजीवनी शक्ति से भरे व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है, जो उन्हें अपनी शिक्षा और साहसिक कार्यों में सर्वोत्तम बनाता है । श्रीकृष्ण का यह प्रस्थान उनके जीवन के एक निर्णायक क्षण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे उनके कर्तव्यों की शुरुआत होती है ।

(ii) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर 'श्रीकृष्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र एक बहुआयामी और प्रेरणादायक व्यक्तित्व का चित्रण करता है । उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. धर्म के रक्षक : श्रीकृष्ण को धर्म के रक्षक और अधर्म का विनाश करने वाले रूप में प्रस्तुत किया गया है । उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक कदम में धर्म का पालन किया और अधर्म के खिलाफ संघर्ष किया ।
2. अहंकार और मोह से परे : कृष्ण का चरित्र मोह और अहंकार से परे था । उन्होंने गीता में अर्जुन को उपदेश दिया कि मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठा से करना चाहिए, बिना फल की चिंता किए ।
3. कूटनीति और रणनीति : श्रीकृष्ण एक महान कूटनीतिज्ञ थे । उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में अपनी रण-नीतियों से विजय प्राप्त की । उनकी राजनीतिक सूझबूझ और धैर्य उन्हें महान नेता बनाता है ।
4. न्यायप्रिय और समानतावादी : कृष्ण ने हमेशा समानता और न्याय की स्थापना की । उन्होंने गोकुल, मथुरा और द्वारका में अपने कार्यों और निर्णयों से यह सिद्ध किया कि वह प्रत्येक प्राणी के लिए समान रूप से न्यायप्रिय हैं ।
5. स्वयं का त्याग : कृष्ण ने अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग करते हुए हमेशा दूसरों की भलाई और समाज की उन्नति के लिए कार्य किया । उन्होंने अपने जीवन में हर कदम पर आत्म-sacrifice का पालन किया ।
6. आध्यात्मिक मार्गदर्शक : श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों को न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी मार्गदर्शन दिया । उनका यह चरित्र उन्हें न केवल एक महान योद्धा, बल्कि एक महान गुरु भी बनाता है ।

Quick Tip
श्रीकृष्ण का जीवन समर्पण, त्याग, और संतुलन का प्रतीक है । उनकी शिक्षाएँ और कार्य हमें जीवन के संघर्षों का सामना करने और धर्म का पालन करने की प्रेरणा देते हैं ।

(ङ) (i) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग में सुभाष चंद्र बोस के जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में सुभाष चंद्र बोस के संघर्ष और भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके दृढ़ संकल्प को प्रमुखता दी जाती है । तृतीय सर्ग में उनका नेतृत्व, उनकी कूटनीति, और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उनके द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख है । इस सर्ग में यह भी बताया गया है कि सुभाष चंद्र बोस ने अपने राष्ट्र के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना किया और किस तरह से उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को और भी प्रबल किया । उनका विश्वास और उनके कृत्य इस सर्ग के केंद्र में हैं,

जिसमें उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाई ।

(ii) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक सुभाष चंद्र बोस का चरित्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा और प्रेरणास्त्रोत के रूप में चित्रित किया गया है । उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. देशप्रेम और निष्ठा : सुभाष चंद्र बोस का जीवन देशप्रेम और राष्ट्र के प्रति निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण है । उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित किया और अपने कृत्यों से यह सिद्ध किया कि देश की सेवा सर्वोच्च कर्तव्य है ।

2. साहस और संघर्ष : सुभाष चंद्र बोस का जीवन साहस और संघर्ष का प्रतीक था । उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और अपनी कूटनीति और साहस से उन्होंने अपने विरोधियों को चुनौती दी । उनकी अगुवाई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और आज़ाद हिंद फौज जैसी महत्वपूर्ण संस्थाएँ बनीं ।

3. सिद्धांतों पर अडिग विश्वास : सुभाष चंद्र बोस ने हमेशा अपने सिद्धांतों का पालन किया । उनका मानना था कि बिना संघर्ष के स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती । उन्होंने अहिंसा की नीति का विरोध करते हुए अपने संघर्ष को सशस्त्र आंदोलन में परिवर्तित किया ।

4. नेतृत्व क्षमता : सुभाष चंद्र बोस के पास अद्वितीय नेतृत्व क्षमता थी । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और जनमानस को प्रेरित किया । उनका नेतृत्व न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा बन गया ।

5. निरंतर संघर्ष : सुभाष चंद्र बोस ने अपनी सारी ऊर्जा और जीवन को भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित किया । उनकी संघर्ष की भावना और त्याग आज भी भारतीयों के लिए प्रेरणास्त्रोत है ।

Quick Tip
सुभाष चंद्र बोस का जीवन हमें न केवल स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष के बारे में बताता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि किसी भी कार्य को अडिग विश्वास और संघर्ष से कैसे पूरा किया जा सकता है ।

(च) (i) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर 'चन्द्रशेखर आजाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य में चन्द्रशेखर आजाद का चरित्र एक प्रेरणा का स्रोत है । उनका जीवन केवल साहस, वीरता और बलिदान का प्रतीक नहीं था, बल्कि वह स्वतंत्रता संग्राम के सबसे महान और नायकपूर्ण नेताओं में से एक थे ।

1. साहस और वीरता : चन्द्रशेखर आजाद ने स्वतंत्रता संग्राम में अत्यन्त साहसिक कार्य किए । उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ कई क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और अपनी वीरता का परिचय

दिया ।

2. स्वतंत्रता के प्रति अडिग निष्ठा : आजाद जी का जीवन स्वतंत्रता के लिए समर्पित था । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी जान की बाजी लगाकर संघर्ष किया और कभी भी अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटे ।

3. कूटनीति और संघर्ष : चन्द्रशेखर आजाद ने अपने संघर्ष में कूटनीति का भी प्रयोग किया । उन्होंने अंग्रेजों को हर मोर्चे पर चुनौती दी और क्रांतिकारी गतिविधियों को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया ।

4. बलिदान और त्याग : आजाद जी का जीवन बलिदान और त्याग का जीवंत उदाहरण है । जब उन्हें अंग्रेजों के द्वारा घेर लिया गया, तब उन्होंने अपनी जान दी, लेकिन उन्होंने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया ।

5. नायकत्व और प्रेरणा : उनका जीवन भारतीय युवाओं के लिए एक आदर्श है । उनका चरित्र सच्चे नायक का प्रतीक है, जो अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान भी बलिदान करने को तैयार था ।

(ii) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के किसी एक सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के दूसरे सर्ग में चन्द्रशेखर आजाद के संघर्ष और उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में आजाद जी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति समर्पण और उनके नेतृत्व का चित्रण किया गया है ।
सर्ग में यह बताया गया है कि चन्द्रशेखर आजाद ने अपने देश की स्वतंत्रता के लिए कई आक्रमण किए, और कैसे उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया । इस सर्ग में उनकी साहसिकता, कूटनीति और बलिदान की भावना को प्रमुखता से दर्शाया गया है । वह समाज में बदलाव लाने और भारत को स्वतंत्र करने के लिए किसी भी कीमत पर संघर्ष करने को तैयार थे । सर्ग के अंत में आजाद जी के आत्मबलिदान और उनकी प्रेरणा का वर्णन किया गया है, जो आज भी स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में जीवित है ।

Quick Tip
चन्द्रशेखर आजाद का जीवन संघर्ष, साहस और बलिदान का अद्भुत उदाहरण है । उनका चरित्र हमें यह सिखाता है कि देश के लिए आत्मसमर्पण और निष्ठा का कोई विकल्प नहीं हो सकता ।

(छ) (i) 'कर्ण' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग 'कर्ण द्वारा कवच-कुण्डल दान' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'कर्ण' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग 'कर्ण द्वारा कवच-कुण्डल दान' में कर्ण की महानता और त्याग को चित्रित किया गया है । इस सर्ग में कर्ण का आत्मीय और निस्वार्थ व्यक्तित्व सामने आता है, जब उन्होंने भगवान इन्द्र को अपना कवच और कुण्डल दान कर दिए । कर्ण को यह जानकारी थी कि यह कवच और कुण्डल उनके जीवन के रक्षार्थ हैं, लेकिन उन्होंने यह दान धर्म के अनुरूप किया, क्योंकि उनका विश्वास था कि जो कुछ भी है, वह दूसरों की भलाई के लिए होना चाहिए । कर्ण का यह कृत्य उनके महान बलिदान और निष्ठा को दर्शाता है, और यह दिखाता है कि उनका दिल हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तत्पर रहता था । इस सर्ग में कर्ण के इस त्याग और निस्वार्थता की तारीफ की गई है ।

(ii) 'कर्ण' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : 'कर्ण' खण्डकाव्य के नायक कर्ण का चरित्र अत्यन्त प्रेरणादायक और बलिदान का प्रतीक है । उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. त्याग और बलिदान : कर्ण ने हमेशा दूसरों के लिए अपने स्वार्थ और जीवन का त्याग किया । उनका प्रसिद्ध कृत्य, जिसमें उन्होंने इन्द्र देवता को अपने कवच और कुण्डल दान कर दिए, यह दर्शाता है कि वह कभी भी किसी भी प्रकार के निजी लाभ के लिए अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे ।

2. निष्ठा और सच्चाई : कर्ण हमेशा अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग रहे । उन्होंने जीवनभर अपने आदर्शों का पालन किया और अपने वचन से कभी पीछे नहीं हटे । उनकी सत्यनिष्ठा और कर्तव्य परायणता उन्हें महान बनाती है ।

3. साहस और वीरता : कर्ण युद्ध भूमि में अत्यन्त साहसी और वीर थे । उन्होंने महाभारत युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया । वह एक महान योद्धा थे, जिनके सामने कभी भी कोई चुनौती बड़ी नहीं थी ।

4. दीन-दयालु और दानी : कर्ण का दिल बहुत बड़ा था और वह हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे । वह किसी भी व्यक्ति की मदद करने में पीछे नहीं हटते थे, चाहे वह उनका शत्रु ही क्यों न हो ।

5. निर्दोष और दीन-हीन लोगों के प्रति स्नेह : कर्ण ने हमेशा गरीबों, असहायों और शोषितों की मदद की । उनका जीवन दूसरों की भलाई और सेवा का प्रतीक था ।

6. धर्म और कर्तव्य के प्रति निष्ठा : कर्ण का जीवन धर्म और कर्तव्य की भावना से प्रेरित था । उन्होंने हर हाल में अपने कर्तव्यों का पालन किया, चाहे उसे कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा हो ।

Quick Tip
कर्ण का जीवन हमें यह सिखाता है कि त्याग, निष्ठा और बलिदान से भरपूर जीवन ही सच्चे आदर्शों और कर्मों का प्रतीक बनता है ।

(ज) (i) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग 'राजभवन' का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग 'राजभवन' में राजा दशरथ के राज्याभिषेक की तैयारी और उसके परिवार के बीच संबंधों का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में भरत की वीरता और उनके राज्य की स्थिति को चित्रित किया गया है । साथ ही, इस सर्ग में भरत के व्यक्तित्व की विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें उनका राजधर्म, उनके आत्मविश्वास और उनके कर्तव्यों के प्रति निष्ठा को प्रमुखता से दिखाया गया है । यह सर्ग एक राजा के कर्तव्यों और परिवार के संबंधों के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया को दर्शाता है । सर्ग के अंत में भरत के समर्पण और राज्य के प्रति उनके लगाव को प्रदर्शित किया गया है ।

(ii) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर 'राम' के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर राम का चरित्र एक आदर्श राजा और व्यक्ति का प्रतीक है । उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. धर्म और कर्तव्य के प्रति निष्ठा : राम ने हमेशा धर्म और कर्तव्य का पालन किया । उन्होंने अपने जीवन में हर स्थिति में धर्म का पालन किया और अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि माना ।

2. सत्यनिष्ठा और सच्चाई : राम का जीवन सत्यनिष्ठा और सच्चाई का आदर्श था । वह हमेशा सत्य बोलने और सचाई का पालन करने में विश्वास रखते थे, चाहे स्थिति कैसी भी हो ।

3. साहस और वीरता : राम ने रावण जैसे अत्यंत शक्तिशाली शत्रु के खिलाफ युद्ध लड़ा । उनकी वीरता और साहस ने उन्हें भारतीय साहित्य में एक महान योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित किया ।

4. त्याग और बलिदान : राम ने अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग किया और अपने परिवार तथा राज्य के कल्याण के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी । उनका जीवन त्याग और बलिदान का प्रतीक है ।

5. न्यायप्रिय और सशक्त शासक : राम ने हमेशा न्याय का पालन किया और अपने राज्य में समानता और शांति स्थापित की । उनका शासन आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया गया, जहाँ हर नागरिक को समान अधिकार प्राप्त थे ।

6. सहनशीलता और संयम : राम के चरित्र में सहनशीलता और संयम की भावना थी । उन्होंने कभी भी किसी से बदला नहीं लिया और हमेशा शांतिपूर्ण तरीके से समस्याओं का समाधान किया ।

Quick Tip
राम का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चे नायक वही होते हैं, जो अपने कर्तव्यों को निभाते हुए त्याग, सत्य, और धर्म का पालन करते हैं ।

(झ) (i) 'तुमुल' खण्डकाव्य के 'मेघनाद' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'तुमुल' खण्डकाव्य के 'मेघनाद' सर्ग में रावण के पुत्र मेघनाद के युद्ध कौशल और उसकी वीरता का वर्णन किया गया है । इस सर्ग में मेघनाद की वीरता को विशेष रूप से सम्मानित किया जाता है, जहाँ वह राक्षसों के राजा रावण का पुत्र होते हुए भी अपने पराक्रम से श्रीराम के साथ युद्ध करने के लिए तैयार होता है । मेघनाद का मुख्य उद्देश्य राम के साथ युद्ध में अपनी शक्ति और सामर्थ्य का प्रदर्शन करना था । इस सर्ग में मेघनाद का पराक्रम और युद्ध की योजना बनाने की उसकी कुशलता को दिखाया गया है, तथा वह युद्ध के मैदान में श्रीराम से मुकाबला करने के लिए तैयार होता है ।

(ii) 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'लक्ष्मण' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'तुमुल' खण्डकाव्य में लक्ष्मण का चरित्र एक अत्यंत प्रेरणादायक और नायकत्व का प्रतीक है । उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. धर्मनिष्ठा और निष्ठा : लक्ष्मण ने हमेशा अपने भाई श्रीराम के प्रति निष्ठा और सम्मान का पालन किया । उन्होंने भाई के साथ हर परिस्थिति में खड़ा होकर अपना कर्तव्य निभाया । उनका जीवन भगवान

राम के प्रति अडिग समर्पण का आदर्श है ।

2. साहस और वीरता : लक्ष्मण युद्ध के मैदान में एक महान योद्धा थे । उन्होंने राक्षसों से युद्ध करते हुए और श्रीराम को संकट में देखकर अपने साहस का परिचय दिया । उनकी वीरता का कोई सानी नहीं था ।

3. समय और परिस्थिति के अनुसार निर्णय : लक्ष्मण ने हमेशा समय और परिस्थिति के अनुसार सही निर्णय लिया । चाहे वह अपने भाई राम के लिए सच्चे मित्र के रूप में समर्थन हो या युद्ध में अपने कर्तव्यों को निभाना हो, उन्होंने हर कार्य में उचित विचार किया ।

4. कर्म और कर्तव्य की भावना : लक्ष्मण का जीवन सदैव कर्म और कर्तव्य की भावना से प्रेरित था । उन्होंने हमेशा धर्म का पालन किया और अपने कार्यों के द्वारा दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया ।

5. त्याग और समर्पण : लक्ष्मण ने अपने जीवन में कई बार त्याग और समर्पण की भावना दिखाई । उन्होंने श्रीराम के संघर्ष में हर कदम पर उनका साथ दिया, चाहे उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ कितनी भी बड़ी क्यों न हों ।

6. सहानुभूति और करुणा : लक्ष्मण ने हमेशा कमजोरों के प्रति सहानुभूति और करुणा दिखाई । उनका व्यक्तित्व न केवल बलिष्ठ था, बल्कि वह एक दयालु और सच्चे मित्र भी थे ।

Quick Tip
लक्ष्मण का जीवन हमें यह सिखाता है कि सही कर्तव्यों का पालन, त्याग, और समर्पण जीवन में सच्चे नायक के रूप में उभरने के लिए आवश्यक गुण हैं ।

---

6. (क) निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

(i) रामधारी सिंह 'दिनकर'

उत्तर : रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974) हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, निबंधकार और स्वतंत्रता सेनानी थे । उन्हें 'राष्ट्रकवि' के उपनाम से भी सम्मानित किया गया । उनका साहित्य भारतीय समाज की जटिलताओं, संघर्षों और उसकी महानता का प्रतिबिंब था । दिनकर जी की कविताएँ राष्ट्रप्रेम, वीरता, और सामाजिक जागरूकता से भरपूर होती थीं । उन्होंने अपनी लेखनी से देशवासियों को जागरूक किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के प्रति प्रेरित किया । उनकी प्रमुख काव्य रचना **"रश्मिरथी"** है, जो महाभारत के कर्ण के चरित्र पर आधारित एक प्रसिद्ध कविता है । इस काव्य में कर्ण की महिमा और त्याग को शानदार तरीके से चित्रित किया गया है । 'रश्मिरथी' ने उन्हें एक महान कवि के रूप में स्थापित किया और हिंदी साहित्य में उनका योगदान अनमोल है ।
रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य के महान कवि, लेखक और स्वतंत्रता सेनानी थे । उनका जन्म २३ सितंबर १९०८ को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में हुआ था । वे भारतीय साहित्य के प्रमुख कवि माने जाते हैं, और उनकी काव्य रचनाएँ विशेष रूप से उनके वीरता, राष्ट्रवाद और समाज सुधार के विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं । दिनकर जी का साहित्य आज भी लोगों के दिलों में गहरे स्थान पर है, और उनके योगदान को हिंदी साहित्य में हमेशा याद किया जाएगा ।

रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्यिक योगदान :
रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ भारतीय इतिहास, समाज, और संस्कृति को एक नए दृष्टिकोण से देखने का आमंत्रण देती हैं । उनका लेखन विशेष रूप से राष्ट्रप्रेम, वीरता, और मानवता के आदर्शों पर आधारित था । उनका कार्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में भी अत्यधिक प्रभावी रहा ।

(ii) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

उत्तर : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (1884-1963) भारत के पहले राष्ट्रपति और महान स्वतंत्रता सेनानी थे । वे एक कुशल नेता, शिक्षाविद् और विचारक थे । उनका जीवन समर्पण, त्याग और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक था । उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की साहित्यिक रचनाएँ शिक्षा, समाज सुधार और राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं । उनकी प्रमुख रचना **"आत्मकथा"** है, जो उनके जीवन के अनुभवों और विचारों का परिचय देती है । इसमें उन्होंने अपनी संघर्षपूर्ण यात्रा, राजनीतिक जीवन और व्यक्तिगत संघर्षों का विवरण किया है । उनकी आत्मकथा भारतीय समाज और राजनीति में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में मानी जाती है ।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता और भारतीय गणराज्य के पहले राष्ट्रपति थे । उनका जन्म ३ दिसम्बर १८८४ को बिहार राज्य के सिताब दियारा गाँव में हुआ था । वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद, और प्रशासनिक क्षमता के धनी थे । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारतीय राजनीति और समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत रहे, और उनका योगदान भारतीय लोकतंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण था ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जीवन और कार्य :
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जीवन एक प्रेरणा था, जो सत्य, अहिंसा और ईमानदारी के आदर्शों पर आधारित था । उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण था, और उन्होंने महात्मा गांधी के साथ मिलकर भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति में अपना योगदान दिया ।

शिक्षा :
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का शिक्षा जीवन अत्यंत प्रेरणादायक था । उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल से प्राप्त की, और फिर आगे की शिक्षा के लिए पटना और काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) में दाखिला लिया । उन्होंने गणित और विज्ञान में अपनी स्नातक की डिग्री प्राप्त की और बाद में इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र में भी अध्ययन किया ।

(iii) भगवतशरण उपाध्याय

उत्तर : भगवतशरण उपाध्याय (1894-1968) हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, कवि और आलोचक थे । वे हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण साहित्यकारों में से एक माने जाते हैं । उन्होंने साहित्य में विविध शैलियों में कार्य किया, जिनमें कविता, कहानी, निबंध, और आलोचना शामिल हैं । उनका साहित्य भारतीय समाज और उसके परिवर्तनों को दर्शाता है । वे एक समाजवादी विचारक थे और उनके साहित्य में समाज सुधार की भावना भी पाई जाती है । उनकी प्रमुख रचनाओं में "कविता के उद्देश्य", "साहित्य की दिशा", और "दर्शन और साहित्य" शामिल हैं । भगवतशरण उपाध्याय के साहित्य में समाज के प्रत्येक पहलू का गहरा विश्लेषण किया गया है ।

भगवतशरण उपाध्याय हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध लेखक, कवि, और आलोचक थे। वे अपने समय के एक महत्वपूर्ण साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनका योगदान हिंदी साहित्य के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण था, विशेष रूप से हिंदी कविता और आलोचना के क्षेत्र में।

जीवन परिचय :
भगवतशरण उपाध्याय का जन्म २९ जुलाई १९१४ को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका जीवन साहित्यिक विचारधारा, समाज सुधार, और सांस्कृतिक चेतना से भरा हुआ था। वे एक गंभीर साहित्यकार और सोचने-समझने वाले व्यक्ति थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य को कई रचनाएँ दीं। उनका साहित्य केवल काव्य तक सीमित नहीं था, बल्कि आलोचना, निबंध और अनुवाद कार्यों में भी उनका योगदान रहा।

Quick Tip
हिंदी साहित्य में इन लेखकों का योगदान बहुमूल्य है, जो न केवल काव्य और साहित्य में गहरी समझ रखते थे, बल्कि भारतीय समाज और राजनीति के बारे में उनके विचार भी प्रेरणादायक हैं।

(ख) निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

(i) सुभद्रा कुमारी चौहान

उत्तर : सुभद्रा कुमारी चौहान (1906-1988) हिंदी साहित्य की प्रमुख कवि और लेखिका थीं। उन्हें 'वीरता की कविता' की प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है। उनका जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रभाव में था, और उनकी कविताओं में भारतीय समाज और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे प्रमुख रूप से उठाए गए हैं। वे विशेष रूप से अपनी वीर गाथाओं और जनकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका जीवन संघर्ष, प्रेरणा और भारतीय संस्कृति की महानता से भरा था। उनकी प्रमुख रचना "झाँसी की रानी" है, जो एक ऐतिहासिक कविता है और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष को समर्पित है। यह कविता वीरता, साहस और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का बेहतरीन उदाहरण है।
सुभद्राकुमारी चौहान हिंदी साहित्य की एक प्रमुख कवयित्री और लेखिका थीं। वे विशेष रूप से अपनी वीरता, देशभक्ति और लोकप्रेमी कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म 16 अगस्त 1904 को मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में हुआ था। सुभद्राकुमारी चौहान का साहित्य भारतीय समाज, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की भावना से प्रेरित था।

सुभद्राकुमारी चौहान का साहित्यिक योगदान :
सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ भारतीय समाज और संस्कृति की गहरी छवि प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, वीरता, और महान भारतीय नायकों के प्रति सम्मान की भावना होती थी। उनकी लेखनी में भारतीय लोकजीवन और उसके संघर्षों की गहरी समझ थी, और उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

(ii) मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर : मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) हिंदी साहित्य के महान कवि और निबंधकार थे । वे हिंदी कविता को एक नई दिशा देने वाले कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । उनका योगदान हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता, सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण रहा है । उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और इतिहास को गहराई से चित्रित किया । उनका काव्य जीवन को सरल और भावनात्मक दृष्टिकोण से देखता था । उनकी प्रमुख रचना *"भारत-भारती" है, जो भारत की महानता और उसकी संस्कृति को प्रदर्शित करती है । यह कविता भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक मानी जाती है और देश के प्रति प्रेम को जागृत करती है ।
मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के एक महान कवि और साहित्यकार थे, जिनका योगदान भारतीय साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है । उन्हें विशेष रूप से हिंदी काव्यधारा में राष्ट्रीयता और संस्कृतिपरक रचनाओं के लिए जाना जाता है । उनका जन्म ३ अगस्त १८८६ को उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगांव गाँव में हुआ था । मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद और धार्मिक भक्ति के प्रतीक के रूप में देखा जाता है । उनके लेखन में भारतीय संस्कृति, समाज और राष्ट्रीयता की गहरी छाप थी ।

(iii) बिहारीलाल

उत्तर : बिहारीलाल (1595-1664) हिंदी साहित्य के महान कवि थे, जिन्होंने काव्य की रीतिकाव्य धारा को नई ऊँचाई दी । वे संस्कृत और हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि थे, जिनका काव्य शृंगारी और भक्तिरस से भरा हुआ था । बिहारीलाल की कविता में सरलता, सजीवता और रसों का अद्भुत मिश्रण था । उनके काव्य में शृंगारी प्रेम और भक्ति का सुंदर संगम मिलता है । उनकी प्रमुख रचना "बिहारी सतसई" है, जो 700 छंदों का संग्रह है और इसमें प्रेम, भक्ति और शृंगार का अद्वितीय चित्रण किया गया है ।
बिहारीलाल हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और रचनाकार थे, जो विशेष रूप से भक्तिकाव्य और काव्यशास्त्र के क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं । उनका समय मुख्य रूप से 17वीं शताब्दी का था, और वे काव्य-रचनाएँ और काव्यशास्त्र में अपनी गहरी समझ के लिए प्रसिद्ध थे । वे हिंदी साहित्य के "साधक काव्य" के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में माने जाते हैं और उनके योगदान को आज भी सराहा जाता है ।

जीवन परिचय :
बिहारीलाल का जन्म ब्रजभूमि के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था, हालांकि उनके जन्म स्थान के बारे में निश्चित जानकारी नहीं मिलती है । उनकी भक्ति भावना और काव्यशास्त्र में रुचि ने उन्हें हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों में शुमार किया । उनका साहित्य वेदांत और भगवद्भक्ति से प्रेरित था, और उनका लेखन उनके काव्यशास्त्र और भक्तिवाद के अद्वितीय मिश्रण का परिणाम था ।

(iv) केदारनाथ सिंह

उत्तर : केदारनाथ सिंह (1934-2018) हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि और निबंधकार थे । उनकी कविताओं में जीवन के सामान्य और अनदेखे पहलुओं को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है । वे आधुनिक हिंदी कविता के स्तंभ माने जाते हैं, जिन्होंने कविता को आम आदमी की भाषा में सरल और अभिव्यक्तिपूर्ण बनाया । उनके काव्य में प्रकृति, जीवन की सादगी और गहरे मनोभावों का अद्भुत चित्रण मिलता है । उनकी प्रमुख रचना "आत्मजा" है, जो उनकी कविताओं का संग्रह है और इसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है ।
केदारनाथ सिंह हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि और लेखक थे । उनका जन्म १९३४ में उत्तर प्रदेश के चकिया गांव में हुआ था । वे समकालीन हिंदी कविता के मूलधारा के महत्वपूर्ण कवि रहे और विशेष रूप से उनकी कविताओं में प्राकृतिक दृश्य, मानवता और आध्यात्मिकता का अद्भुत संयोजन देखा जाता

था । केदारनाथ सिंह का लेखन जीवन के छोटे-छोटे पहलुओं और समाज के गहरे भावनात्मक अनुभवों को व्यक्त करने में सक्षम था ।

Quick Tip
इन कवियों ने हिंदी कविता को नया आयाम दिया और समाज में जागरूकता, राष्ट्रीयता और मानवता को महत्वपूर्ण स्थान दिया । उनकी रचनाएँ आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं ।

---

7. अपनी पाठ्यपुस्तक में से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए, जो इस प्रश्नपत्र में न आया हो ।

उत्तर : 'न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥'

Quick Tip
श्लोकों का नियमित अभ्यास मानसिक एकाग्रता और संस्कृत भाषा के प्रति गहरी समझ विकसित करने में मदद करता है । श्लोकों का सही उच्चारण और कण्ठस्थ करना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह न केवल संस्कृत के प्रति सम्मान बढ़ाता है बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन और स्थिरता भी लाता है ।

---

8. अपने निवास स्थान के आसपास/मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर/जनपद के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए ।

उत्तर :
दिनांक : _____
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम,
शहर का नाम

,
पिन कोड

विषय : मोहल्ले की नालियों की सफाई के लिए निवेदन ।

मान्यवर,

मैं, [आपका नाम], [आपका मोहल्ला/गली का नाम], [शहर का नाम], का निवासी, आपके समक्ष निवेदन करता हूँ कि हमारे मोहल्ले की नालियों की सफाई अत्यंत आवश्यक हो गई है । इन नालियों की सफाई न होने के कारण गंदगी का ढेर जमा हो गया है, जिससे न केवल बदबू आ रही है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी खतरे का कारण बन सकता है । खासकर मानसून के मौसम में जलभराव और मच्छरों का प्रकोप बढ़ सकता है, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियाँ फैलने का खतरा रहता है ।

अत:, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि हमारे मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई की व्यवस्था की जाए ताकि इन समस्याओं से बचा जा सके और आसपास का वातावरण स्वच्छ और सुरक्षित रहे ।

कृपया इस विषय पर शीघ्र कार्रवाई करने की कृपा करें ।

धन्यवाद ।

आपका विश्वासी,
आपका नाम

आपका पता

फोन नंबर

Quick Tip
स्वच्छता और सफाई न केवल हमारे आस-पास के वातावरण को सुखमय बनाती है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य को भी बेहतर रखती है । नालियों की सफाई समय-समय पर सुनिश्चित करना बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक है ।

अथवा

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए एक आवेदनपत्र लिखिए ।

उत्तर :
दिनांक : _____
प्रधानाचार्य,
विद्यालय का नाम

,
विद्यालय का पता

शहर का नाम

विषय : छात्रवृत्ति के लिए आवेदन ।

मान्यवर,

मैं, [आपका नाम], कक्षा [कक्षा का नाम] का छात्र, आपके विद्यालय में अध्ययनरत हूँ । मैं आपके विद्यालय में पिछले [समय] से पढ़ाई कर रहा हूँ । मुझे यह पत्र लिखने की आवश्यकता है क्योंकि मुझे छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना है ।

मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है, और मेरे माता-पिता मेरी शिक्षा के खर्चों को पूरी तरह से वहन करने में असमर्थ हैं । इसके कारण, मुझे शिक्षा के क्षेत्र में कई कठिनाइयों का सामना करना प-

ड़ता है । इसलिए, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मुझे विद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति प्रदान की जाए, ताकि मैं अपनी पढ़ाई पूरी कर सकूं और अपने भविष्य को उज्जवल बना सकूं ।

कृपया मेरे आवेदन पर विचार करें और मुझे छात्रवृत्ति प्रदान करने की कृपा करें ।

धन्यवाद ।

आपका विश्वासी,
आपका नाम

कक्षा का नाम

रोल नंबर

विद्यालय का नाम

Quick Tip
छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करते समय यह महत्वपूर्ण है कि आप अपनी स्थिति को स्पष्ट और ईमानदारी से प्रस्तुत करें । सही दस्तावेज़ों के साथ आवेदन करें और अपने कारणों को संक्षेप और प्रभावी रूप से व्यक्त करें ।

---

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

(i) भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ?
उत्तर :

भूमेः गुरुतरं जलं अस्ति ।

(ii) विद्या केन वर्धते ?
उत्तर :

विद्या श्रवण-चिन्तन-समाधिना वर्धते ।

(iii) चन्द्रशेखर : कः आसीत् ?
उत्तर :

चन्द्रशेखरः एक : महान : स्वतन्त्रता सेनानी आसीत् ।

(iv) वाराणसीं नगर्यां कृति विश्वविद्यालया : सन्ति ?
उत्तर :

वाराणसीं नगर्यां काशी हिन्दू विश्वविद्यालयं अस्ति ।

Quick Tip

संस्कृत के अध्ययन से न केवल भाषा का ज्ञान होता है, बल्कि यह हमारी विचारधारा और सांस्कृतिक धरोहर को भी सुदृढ़ बनाता है । संस्कृत के श्लोकों और पाठों से हमारी मानसिक क्षमता, शुद्धता और एकाग्रता में वृद्धि होती है ।

---

10. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :
(i) पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या एवं समाधान

उत्तर :
पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या एवं समाधान
आज के समय में पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गई है, जो हमारे जीवन को संकट में डाल रही है । प्रदूषण के कारण हमारे स्वास्थ्य, जलवायु, वन्यजीव और प्राकृतिक संसाधन गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं । प्रदूषण के प्रमुख कारणों में औद्योगिकीकरण, वाहनों का बढ़ता हुआ प्रयोग, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग, और रासायनिक अपशिष्टों का नदियों में प्रवाह शामिल हैं । इन कारणों से वायु, जल और मृदा प्रदूषण बढ़ता जा रहा है ।
वायु प्रदूषण : यह प्रदूषण मुख्य रूप से औद्योगिक गतिविधियों, वाहनों के धुएं और लकड़ी जलाने के कारण होता है । वायु में धूल, रासायनिक धुएं, कार्बन मोनोऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसें मिलकर वायु प्रदूषण का कारण बनती हैं । वायु प्रदूषण के कारण अस्थमा, हृदय रोग और कैंसर जैसी बीमारियाँ फैल रही हैं ।
जल प्रदूषण : जल प्रदूषण का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण और कृषि में रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग है । नदियाँ और झीलें रासायनिक अपशिष्टों, प्लास्टिक और अन्य कचरे से भर गई हैं, जिससे जल जीवन पर खतरा मंडरा रहा है ।
मृदा प्रदूषण : खेती में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग मृदा प्रदूषण का कारण बनता है । साथ ही, प्लास्टिक कचरा और औद्योगिक अपशिष्ट भी मृदा की गुणवत्ता को नष्ट कर रहे हैं ।
समाधान : पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं । सबसे पहले, हमें वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित किया जा सके और वायुमंडल को शुद्ध किया जा सके । इसके अलावा, हमें पुनर्चक्रण और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए । प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए हमें प्लास्टिक प्रतिबंध लागू करना चाहिए और सतत विकास की ओर अग्रसर होना चाहिए ।
इसके अलावा, शिक्षा और जागरूकता महत्वपूर्ण है । लोगों को प्रदूषण के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना होगा ताकि वे अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का पालन करें ।
निष्कर्ष : पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, लेकिन अगर हम सभी मिलकर प्रयास करें और उचित कदम उठाएँ तो हम इसे नियंत्रित कर सकते हैं । हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारी धरोहर है और इसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है ।

Quick Tip

पर्यावरण संरक्षण में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है । अगर हम सभी मिलकर छोटे-छोटे कदम उठाएं, तो हम पर्यावरण प्रदूषण को कम कर सकते हैं ।

(ii) इण्टरनेट

उत्तर :
इण्टरनेट
इण्टरनेट आज की दुनिया में एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है । यह एक ग्लोबल नेटवर्क है जो लाखों कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ता है और उन्हें सूचनाएँ साझा करने की सुविधा प्रदान करता है । इंटरनेट ने समाज के सभी क्षेत्रों जैसे शिक्षा, व्यापार, संचार, और मनोरंजन में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं । इंटरनेट के माध्यम से लोग एक-दूसरे से तात्कालिक रूप से जुड़ सकते हैं, जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, और अपने विचारों और अनुभवों को साझा कर सकते हैं । इसने शिक्षा के क्षेत्र में भी एक नई दिशा दी है, जहां ऑनलाइन शिक्षा और शोध को बढ़ावा मिला है ।
इंटरनेट के लाभ : - तात्कालिक सूचना का आदान-प्रदान
- ऑनलाइन शॉपिंग और सेवाओं का उपलब्ध होना
- शिक्षा और ज्ञान का प्रसार
- सोशल नेटवर्किंग और मनोरंजन की सुविधा

इंटरनेट के खतरे :
- साइबर अपराध और हैकिंग
- गोपनीयता का उल्लंघन
- अवांछनीय सामग्री का प्रचार
- इंटरनेट की लत

निष्कर्ष : इंटरनेट ने हमारे जीवन को आसान और अधिक सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी आई है । हमें इसे समझदारी से और सुरक्षित रूप से उपयोग करना चाहिए ।

Quick Tip
इंटरनेट के उपयोग में सुरक्षा और गोपनीयता का ध्यान रखना आवश्यक है । निजी जानकारी को साझा करते समय सतर्क रहना चाहिए ।

(iii) छात्र तथा अनुशासन

उत्तर :
छात्र तथा अनुशासन
अनुशासन किसी भी समाज, संस्था या व्यक्ति के जीवन का अभिन्न हिस्सा है । छात्रों के लिए अनुशासन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें जीवन में सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करता है । अनुशासन के बिना किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है ।
अनुशासन के लाभ :
- समय की प्रबंधना और कर्तव्यों का पालन
- उच्च शिक्षा में सफलता
- मानसिक शांति और समर्पण की भावना
- सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में सामंजस्य

- कार्य में संतुलन और बेहतर प्रदर्शन

छात्रों को अनुशासन से जीवन में एक दिशा मिलती है, जिससे वे अपनी क्षमताओं का सही उपयोग कर पाते हैं । छात्रों को यह समझना चाहिए कि अनुशासन केवल कठिनाई का नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान और आत्म-निर्माण का साधन है ।
निष्कर्ष : अनुशासन छात्रों के जीवन को सही दिशा प्रदान करता है और उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद करता है । यह केवल स्कूल के भीतर ही नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है ।

Quick Tip
अनुशासन केवल नियमों का पालन नहीं है, बल्कि यह आत्म-नियंत्रण और समय की प्रबंधना भी है, जो एक छात्र को सफलता की ओर अग्रसर करता है ।

(iv) किसी एक त्योहार का वर्णन

उत्तर :
दीवाली
दीवाली भारतीय संस्कृति का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय त्योहार है, जिसे पूरे भारत में धूमधाम से मनाया जाता है । यह विशेष रूप से हिंदू धर्म के अनुयायियों द्वारा मनाया जाता है, लेकिन अन्य धर्मों के लोग भी इस दिन को खुशी से मनाते हैं । दीवाली का पर्व अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का प्रतीक है ।
दीवाली की विशेषताएँ : - दीपों की रात : घरों में दीप जलाए जाते हैं, जो अंधकार को दूर करते हैं और खुशी और समृद्धि का प्रतीक होते हैं । - पूजा और श्रद्धा : इस दिन भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है, ताकि घर में सुख, समृद्धि और समृद्धि का वास हो । - पटाखे और मिठाइयाँ : दीवाली के दौरान पटाखे जलाए जाते हैं और मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं ।
निष्कर्ष : दीवाली न केवल धार्मिक महत्व का पर्व है, बल्कि यह समाज में खुशियाँ और समृद्धि लाने का अवसर भी है । इस दिन के माध्यम से हम अपने परिवार, मित्रों और समाज के साथ प्रेम और भाईचारे को बढ़ावा देते हैं ।

Quick Tip
दीवाली का त्योहार हमें अपने पुराने कर्ज़ों और बुराईयों को छोड़कर अच्छाई और समृद्धि की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है । यह समय है अपने रिश्तों को मजबूत करने और समाज में प्रेम फैलाने का ।

(v) नई शिक्षा नीति

उत्तर :
नई शिक्षा नीति
2020 में भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति (NEP) को लागू किया, जिसका उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना और छात्रों की सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है । इस नीति में प्राथमिक शिक्षा से

लेकर उच्च शिक्षा तक कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं, ताकि भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सके ।
नई शिक्षा नीति के प्रमुख पहलू : - मूल्य आधारित शिक्षा : छात्रों को केवल अकादमिक ज्ञान नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक शिक्षा भी प्रदान की जाएगी ।
- प्रवेश की लचीलापन : छात्रों को विभिन्न शैक्षिक क्षेत्र में लचीलापन और विकल्प मिलेगा, जिससे वे अपनी रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम चुन सकेंगे ।
- तकनीकी शिक्षा का विकास : डिजिटल शिक्षा का बढ़ावा दिया जाएगा, और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार किया जाएगा ।
- बहुभाषी शिक्षा : छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रयास किया जाएगा ताकि उनकी सोच और समझ बेहतर हो सके ।

निष्कर्ष : नई शिक्षा नीति भारत के शिक्षा क्षेत्र को 21वीं सदी के लिए तैयार करने का एक महत्वपूर्ण कदम है । इसके द्वारा छात्रों को अधिक समग्र दृष्टिकोण से शिक्षा प्राप्त होगी, और वे एक अच्छे नागरिक और पेशेवर बन सकेंगे ।

Quick Tip
नई शिक्षा नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को 21वीं सदी के आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करना है । इसके माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं ।